Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

पवमान

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का मासिक पत्र

PAVAMAAN Monthly, Dehradun

वर्ष ११ | अक्टूबर–नवम्बर १९९९ संयुक्तांक | सम्पादक
अंक १०–११ | कार्तिक–मार्गशिर २०५६ | देवदत्त बाली

पत्र–व्यवहार के लिए:–
सम्पादक, 'पवमान',
१६३–२ पल्टन बाजार,
देहरादून–२४८००१
दूरभाष ६५५४५३

'पवमान' का शुल्क आजीवन ३००/–रुपये (संस्थाओं के लिए ४५०/– रुपये) वार्षिक ३०/– रुपये। इस अंक का ५/– रुपये।

आवश्यक सूचना

शुल्क–राशि सम्पादक को उपरिलिखित पते पर ही भेजनी चाहिए। बाहर से धन भेज़ने का माध्यम धनादेश या माँग–ड्राफ़्ट ही मानें। चैक केवल देहरादून के ही स्वीकार्य हैं। चैक/ड्राफ़्ट वैदिक साधन आश्रम के पक्ष में रेखांकित (क्रॉस किए हुए) हों।

सम्पादकीयम्

देश को बचाना है तो चिन्तन कीजिए

हमारे देशकी राजनीति के लिए इस समय सबसे भयानक समस्या है जनसँख्या–विस्फोट। पिछली कई जनगणनाओं के आंकड़े इसके प्रमाण हैं।

राजनीतिक दल शायद इस बात को कहने से डरते हैं परन्तु विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टि से विचार किया जाय तो कहा जा सकता है कि जनसंख्या–नियन्त्रण किये बिना, चाहे कोई भी राजनीतिक दल सत्ता में आ जाये, इस देश को बचा नहीं सकेगा। यदि जनसंख्या इसी गति से बढ़ती रहे तो कृषि के लिए भूमि कैसे बचेगी ? आज ही सड़कों पर जो भीड़ है उसमें सड़क पार करना एक दुष्कर कार्य प्रतीत होता है। कारों, स्कूटरों, ट्रकों, बसों आदि वाहनों के जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारखाने देश में खुल रहे हैं, उनके माल की खपत हो रही है। वे सब भी लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष इन्हीं सड़कों पर आते जायेंगे और बढ़ती हुई जनसंख्या को ध्यान में लाया जाये तो आनेवाले ५–१० वर्षों में देश की सड़कों पर पैदल चलने वालों तथा इन सब वाहनों के लिए स्थान कहां से आयेगा ? बेरोज़गारी तथा ग़रीबी के नारे हर चुनाव में सत्ताहीन राजनीतिज्ञों द्वारा लगाये जाते हैं। वे भी निराधार नहीं हैं परन्तु न जाने क्यों इस समस्या के समाधान के बारे में सभी दल मौन साधे रहते हैं। कारण एक ही है–सत्ताको कोसने के लिए यह नारे अच्छे हैं परन्तु कोसने वालों के पास भी कोई समाधान नहीं है या उसे बताने से ये डरते हैं।

इस बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए सन्तुलित भोजन, तन ढांपने को कपड़ा, रहने व सोने के लिए झोंपड़ा और सबसे बढ़कर पीने के लिए पानी कैसे उपलब्ध कराया जायेगा ? इस बारे में राजनीतिक लोग अन्धेरे में ही रहना चाहते हैं और जिनसे वोट की याचना करते हैं उनको बताने के लिए भी इनके पास कोई उत्तर नहीं है। फिर सबको शिक्षित करने का सवाल तो बहुत दूर है।

कहते है कि हमारे पड़ोसी चीन ने किसी सीमा तक अपनी जनसंख्या पर नियन्त्रण कर लिया है परन्तु हमारे देश का गत कुछ शताब्दियों का इतिहास हमें जो शिक्षा देताहै उससे लाभ उठाकर जो मार्ग हमें अपनाना चाहिए था उसे अपनाने से सब राजनीतिक लोग डरते हैं। जिस मज़हबी वर्ग ने भारत की स्वतन्त्रता का सदा विरोध किया और अन्त में अपने "अलग मज़हब, अलग राष्ट्र" के सिद्धान्त को स्वीकार कराकर देश का १९४७ में विभाजन करा लिया था, १९४७ के बाद के जनसंख्या के आँकड़े साक्षी हैं कि उन्हीं की जनसंख्या–वृद्धि की दर अब भी अधिक है। कहते हैं कि इसी वर्ग के एक चहेते नेता ने ४–५ वर्ष पहले ईरान में अपने हम–मज़हबों को विश्वास दिलाया था कि चिरकाल से पूर्व वह भारत में एक नया मज़हबी राज्य पाकिस्तान की तरह बनवाने में सफल हो जायेंगे। अपने इस आशावाद के लिए उसने दो दलीलें दी थीं:– १– हम अधिक बच्चें पैदा कर रहे हैं। २– पाकिसतान और बंगलादेश से आने वाले अपने भाइयों को भारत में शरण दिलाने में उनकी सहायता कर रहे हैं।

इसकी अधिक व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। हर व्यक्ति जिसके मस्तिष्क में बुद्धि का कोई अंश है इस खतरे को आसानी से समझ सकता है।

इस देश में यदि १९४५–४६ वाली मारकाट नहीं होने देनी हो जिससे डरकर उस समय के उस नेता ने भी देश का विभाजन स्वीकार कर लिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

था जो सदा यह कहता आया था कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा और यदि एक अरब से भी अधिक भूखे–नंगे आश्रयहीन और निरक्षर लोगों की संख्या इस सीमा तक नहीं बढ़ने देनी है कि यहां सांस लेने को भी जगह न रहे तो जनसंख्या–विस्फोट को रोकने के लिए सब भारतीयों के लिए बिना भेदभाव के जनसंख्या–नियन्त्रण के कठोर नियम लागू करने होंगे।

देश की चिन्ता जिस को है वह इस समस्या पर विचार करे ओर जन–जन को इस पर विचार करने को प्रेरित करे।

उससा कोई और नहीं है!

––सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'
प्रेमनगर, नेमदारगंज नवादा,(बिहार)–८०५१२१

वही है, वह ही है! उससा कोई और नहीं है ।
भूलकर उसकी सत्ता को, कैसे कह दें वह नहीं है।।
उसकी बनाई सृष्टि में, सब कुछ दिखाई पड़ता।
असफल जहाँ है दृष्टि, है मन्त्रों से काम चलता ।
बुद्धि–विवेक से भी, हम कुछ को देख लेते पर ।
वह नज़र न आता कैसा है वह कहाँ है, वहाँ है या यहीं है ।।
कैसे कह दें वह नहीं है।।
हँसती वसुन्धरा है, फल–फूल–क्षुप उगाकर ।
बहती हैं नदियाँ सारी, कल–कल के गीत गाकर।।
घिरती घटायें काली या धूप स्वच्छ–निर्मल मन मोह लेती सबके।
बिन भेद भावना के, रुकती नहीं कहीं है ।।
कैसे कह दें वह नहीं है।।
जिसको बनाया उसने सबकी है एक खूबी, ।
इच्छा, प्रयत्न, सुख–दुःख, जीवन–मरण बखूबी।।
सब एकसा समर्पित, हर्षित दिखाई पड़ते।
शिशु सा रुदन मचाकर, अपना उसे बनाकर, पा जाते सच यकीं है।
कैसे कह दें वह नहीं है।।

संस्कृत-महिमा

विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत है, जो सभी यूरोपीय भाषाओं की जननी है। संस्कृत भाषा संगणक के लिए सर्वोत्तम है और साफ्टवेयर में आसानी से उपयोग की जा सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृष्ण-जन्म से सम्बन्धित कुछ प्रश्न

--यशपाल आर्य, देहरादून

१– हरिवंश पुराण में वर्णन आया है जब कंस ने देवकी से वह आठवीं सन्तान मांगी तो देवकी ने गिड़गिड़ाकर कंस से कहा "भैया! यह तो कन्या है। कन्या से तुम्हें क्या भय हो सकता है ? इसे जीवनदान दे दो। आप तो पहले ही मेरे गर्भ में ही स्थित सात वीर पुत्रों को गर्भ में ही नाश कर चुके हैं।

दारिका तु प्रजातेति कंस समभियाचती।
श्रीमन्तो मे हतः सप्तगर्भावस्त्वया विभो।। (४–३२–२२४)

देवकी के इस कथन से यह बात साफ़ हो गई कि कृष्ण से पूर्व देवकी के सारे गर्भ प्रकट होने से पूर्व ही गर्भ में ही नष्ट हो गए थे। कृष्ण से पूर्व किसी सन्तान ने जन्म लिया ही नहीं था।

२– यदि यह माना जाये कि कोई आकाशवाणी हुई थी तो स्वीकार करना पड़ेगा कि कम से कम कंस ने तो उस आकाशवाणी पर कतई विश्वास नहीं किया।

३– यदि विश्वास करता तो वह देवकी की सात सन्तानों की हत्या कर ही नहीं सकता था क्योंकि आकाशवाणी के कथनानुसार तो उसे केवल आठवीं सन्तान से भय था।

४– यदि ऐसा माना जाय कि वह सावधानी बरत रहा था तो उसे देवकी और वसुदेव को अलग जेलों में बन्दी बनाकर रखना चाहिए था। न इकट्ठे रहते, न सन्तानें जन्म लेतीं। या उसे उसी समय देवकी की हत्या कर देनी चाहिए थी। जब देवकी ही मर जाती तो देवकी के आठवें गर्भ वाला भय निश्चित तौर पर सदा–सदा के लिए ख़त्म हो जाता। जो बहिन के सात–सात बच्चों की निर्दयतापूर्वक हत्या कर सकता था, उसे एक बहिन देवकी को मार डालने में काहे की परेशानी होती ? यदि पाप लगने की बात होती तो निश्चय से एक हत्या करने में पाप कम लगता। सात हत्याएं करने में तो बहुत बड़ा पाप होता है (न बहन बहनोई को ही जेल में डालना पड़ता)। स्पष्ट है कि न कोई आकाशवाणी हुई, न कस को ऐसा कुछ करना पड़ा। देवकी की छः सन्तानें तो जीवित गर्भ से बाहर आ ही नहीं सकती थीं। यह तो पौराणिकों की अपनी मान्यता भी है।

हम यह बात बिना आधार के नहीं कह रहे हैं कि देवकी की छः सन्तानें तो जन्म ही नहीं ले सकती थीं। उन्हें तो गर्भ में ही नष्ट होना था। यही उन छः सन्तानों की नियति थी:–

क– हिरण्यकश्यपु दैत्य के पौत्र हिरण्यकश्यपु को छोड़कर, ब्रह्माजी की उपासना करनेलगे। ब्रह्मा इन षड्गर्भ नाम के दैत्यों पर प्रसन्न होकर (२–१४–२१६)। उन्होंने

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi.

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्रह्माजी से वर मांगा। वर मिल गया।

"यक्ष, गंधर्व, पितर, चारण, सिद्ध तथा मनुष्यों द्वारा हमारा वध न हो।" (२–१८–२१६)

अवध्याः स्याम् भगवन् देवतैः समहोरगैः।
शापप्रहरणैश्चैव स्वस्ति नो अस्तु महर्षिभिः।।
यक्षगन्धर्वपतिभिः सिद्धचारणमानवैः ।
माभूद वधो नो भगवान् ददासि यदि नो वरम्।(२–१८–२१६)

स्पष्ट है यदि वे षड्गर्भ जन्म ले लेते तो कंस इनकी हत्या कर ही नहीं सकता था।

६– जब हिरण्यकश्यपु को पता चला कि ब्रह्मा ने षड्गर्भों को वरदान दे दिया है कि कोई भी इनको मार ही नहीं सकेगा तो हिरण्कश्यपु ने अपने इन षड्गर्भ पौत्रों को शाप दे दिया, "अरे तुम्हें कोई मारेगा तो तब, जब तुम जन्म लोगे। मैं तुम्हें जन्म लेने ही नहीं दूंगा। तुम कभी जन्म ले ही नहीं सकोगे"।

षड्गर्भा इति योऽयं वः शब्द पित्राभिवर्धितः।
स एवं वो गर्भगतान् पिता सर्वान् वधिष्यति।। २–२२–२१७
षडेव देवकीगर्भे षड्गर्भा वै महासुराः ।
भविष्यथ ततः कंसो गर्भस्थान् वो वधिष्यति।। २–२३–२१७

"जिस पिता ने तुम्हें षड्गर्भ नाम दिया और पाल–पोसकर बड़ा किया वही पिता गर्भ में ही तुम्हारा वध कर डालेगा। तुम सब महा असुर देवकी के गर्भ में स्थित होंगे। तब तुम्हारा पिता तुम गर्भस्थों का ही वध कर डालेगा।"

इस शाप के अनुसार भी इन षड्गर्भो ने तो जन्म लेना ही नहीं था, गर्भ में ही मर जाना था। गर्भ गिर जाने का लाभ उठाकर गर्भ गिराने का दोषी कंस को बता दिया गया ।

इस प्रकार अवतारवादियों की अपनी मान्यता के अनुसार ही देवकी की ये छः सन्तानें जन्म ले ही नहीं सकती थीं, न उन्होंने कभी जन्म लिया।

ख– नारद ने कंस को सावधान करते हुए कहा थाः–

यस्त्वयं नन्द गोपस्य कृष्ण इत्युच्यते सुतः।
अतः नारद मे प्राह सुमहत्कर्मकारणम्।।
द्वितीयो वसुदेवाद् वै वासुदेवो भविष्यति।
स हि ते सहजो मृत्युः बान्धवश्च भविष्यति।। (२–५१–६०–२८३)

"व्रज में जितने भी बड़े बड़े कर्म हुए हैं या हो रहे हैं, उनका प्रधान कारण कृष्ण है। यह वसुदेव से उत्पन्न होने वाला, वसुदेव का दूसरा पुत्र है, इसीलिए वासुदेव नाम से विख्यात है। वही तुम्हारा बान्धव है जो सरलता से तुम्हारी मृत्यु का कारण बन ही सकता है। देवकी का आठवां पुत्र होने का स्वयं खण्डन हो

Dr. Vivekanand Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया। कृष्ण वसुदेव का दूसरा पुत्र है और देवकी का पहला। वसुदेव की पहली सन्तान तो बलराम है।

फिर कृष्ण का यशोदा द्वारा पालन क्यों ? आप पूछ सकते हैं यदि आकाशवाणी नहीं हुई थी, तो कृष्ण को नन्द ग्राम में क्यों पाला जा रहा था ?

एक प्रकार से इस प्रश्न का समाधान तो हम पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं। फिर भी क्रमवार दोहरा भर देते हैं।

क– देवकी की सन्ताने जीवित नहीं रहती थीं। सब सन्ताने गर्भ में ही नष्ट हो गई। देवकी का गर्भाशय अत्यन्त दुर्बल था इसीलिए कृष्ण भी अठमासे पैदा हुए थे।

गर्भकाले त्वसम्पूर्णे अष्टमे मासि ते स्त्रियौ
देवकी च यशोदा च सुषुवाते समं तदा। (वि० ४–११–२२२)

गर्भ का समय पूर्ण होने से पहले ही आठवें मास में उन दोनों स्त्रियों–यशोदा और देवकी ने प्रायः एक ही साथ प्रसव किया।

अष्टमस्य तु मासस्य जातावावां ततः समम्
प्राप्स्यावो गर्भवत्यासं प्राप्ते कंसस्यनाशन (वि० १३–३७–२१८)

"हम दोनों भाई–बहिन गर्भ के आठवें मास में जन्म लेंगे। फिर कंस के भावी विनाश का कारण प्राप्त होने पर–दोनों साथ ही गर्भ्यत्सास को प्राप्त होंगे। (बदले जाएंगे)"

ख– इस बात की भी प्रबल संभावना है कि माता देवकी के पास दूध की कमी रही हो। इस कारण भी उसे किसी दूसरी माता के दूध पर पालना पड़ सकता था।

ग– परन्तु इन सब कारणों से बड़ा कारण तो दूसरा ही था। यदि ऊपर के दोनों कारण न भी होते तो भी वसुदेव के सामने अपनी सन्तानों को, कंस की नज़र से बचाकर कहीं दूर रखना अति आवश्यक कार्य था और क्योंकि वसुदेव नन्द पर पूरा विश्वास कर सकते थे तथा नन्द भी सन्तानहीन होने के कारण सन्तान के रूप में किसी का पालन भी करना चाहता था इसलिए कृष्ण आदि को सुरक्षित रखने के लिए इससे अधिक निरापद स्थान दूसरा तो संभव नहीं नहीं था।

परिवार को कंस की दृष्टि से दूर, मथुरा से दूर रखना क्यों आवश्यक हो गया था, इसका कारण था। कंस नारद जी के कहने से यह तो जान गया था कि वसुदेव विद्रोहियों में है परन्तु वसुदेव की वास्तविक भूमिका क्या है, यह तो कंस को पता नहीं थी। कंस भले ही न जानता हो परन्तु वसुदेव जी तो अपने विषय में सब कुछ जानते थे कि मैं किस बारूद के ढेर पर बैठा हूं ? वे जानते थे एक दिन तो भण्डा फूटेगा ही और जब भण्डा फूटेगा तो उसका सारा परिवार एकदम असहाय, केवल कंस की दया पर ही निर्भर रह जायगा। विस्फोट होने पर पहली गाज तो उसी के परिवार पर गिरेगी। राजा सारे परिवार को कोल्हू में पिड़वा डाले या सन्तानों को बन्दी बना ले और उसके बढ़ते पगों में सन्तान–वध के भय की भयंकर बेड़ियां डाल दे। सब ऊंच–नीच पर अच्छी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

(आगे देखें पृष्ठ ३१७)

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दैनिक यज्ञ, सामूहिक यज्ञ की विधि

–यशपाल आर्य, देहरादून

इस पुस्तक की आवश्यकता क्यों ?

दैनिक यज्ञ के लिए सैंकड़ों छपी हुई यज्ञ–पुस्तकें इस समय उपलब्ध हैं। इन छपी यज्ञविधियों में दैनिक यज्ञ, प्रातः कालीन यज्ञ, सांय कालीन यज्ञ, तथा विशेष यज्ञों के मन्त्र एक स्थान पर इकट्ठे छपे होते हैं और यज्ञकर्त्ता को अपने काम के मंत्र उसमें से बार–बार छांटने पड़ते हैं। इस प्रकार यज्ञकर्त्ता परेशानी में फँसा रहता है। हम ने इस पुस्तक में सब कुछ स्वयं छांट कर इस प्रकार पृथक् पृथक् छाप दिया है कि केवल प्रातःकाल यज्ञ करने वालों की सम्पूर्ण विधि अलग, सायंकाल यज्ञ करने की विधि पृथक् दूसरे स्थान पर, केवल एक ही समय यज्ञ करने वालों के लिए सम्पूर्ण विधि अलग एक ही स्थान पर तथा साप्ताहिक यज्ञ की विधि और सन्ध्या की विधि भी अलग–अलग छाप दी है। इससे पुस्तक का आकार तो काफ़ी बढ़ गया है परन्तु उपयोगिता कहीं अधिक बढ़ गई है। हम ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की विधि के अनुसार एकरूपता बनी रहे।

यज्ञ की तैयारी

यह सामान चाहिए :–

१. घृत – हवन सामग्री – समिधाएं – यज्ञकुण्ड – कपूर – माचिस– एक लोटा जल, आम या गूलर, पलाश की समिधाएं।
२. जितने यज्ञ करने वाले हों उतने कटोरी तथा चमचे (आचमन के लिए)।
३. जितने यज्ञ करने वाले हों उतने आसन। घृत के लिए एक पात्र जिस में पकड़ने के लिए डण्डी लगी हो (गरम करने के लिए)।
४. लम्बी डण्डी का एक चमचा (घृताहुति के लिए)
५. जितने लोग सामग्री की आहुतियां दें–उतनी तश्तरियां (सामग्री के लिए)।

यज्ञोपवीत गले में न हो या खण्डित हो गया हो तो दूसरा डाल लें। तीन तार वाले यज्ञोपवीतको पूरा खोलकर दोनों हाथों में पकड़ लें तब मंत्र बोलें–

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।२

और इन मंत्रों को बोलकर यज्ञोपवीत को अपने गले में माला की तरह धारण करलें। अब यज्ञोपवीत के नीचे से अपना सीधा हाथ डाल कर हाथ बाहर निकाल लेंगे कि यज्ञोपवीत बाएं कन्धे पर रह जाए और सीधे हाथ के नीचे लटकता रहे।

यदि धोती बान्धते हों तो ठीक। न बांधनी आती हो तो तहमद की तरह लपेट लें, जैसे साधु या पहलवान लपेटते हैं परन्तु धोती के अभाव में यज्ञ नहीं छोड़ना है। आसन पर यजमान इस प्रकार बैठे कि उस का मुख उधर हो जाय जिस ओर से सूर्योदय होता है। रीढ़ की हड्डी तनी रहना स्वास्थ्य के लिये हितकर है।

-- १ --

जो दिन में केवल एक ही बार यज्ञ करते हैं उनकी यज्ञविधि

आचमन – सीधे हाथकी हथेलीमें जल भर लें और मंत्र बोलें (तीन मंत्र–तीन आचमन)

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। (हथेलीका जल पी जावें, दोबारा जल भर लें)
ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा। (हथेली का जल पी जावें, पुनः जल भर लें)
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा। (हथेली का जल पी जावें, हाथ धोलें)

अंग–स्पर्श – उलटे हाथ की हथेली में जल भर लें और अपने सीधे हाथ की दो अंगुलियों (बीच वाली तथा चिचली के साथ वाली अनामिका) को जल में छुआ कर एक एक मंत्र बोलते जाएं और अपने शरीर के अंगों को पानी छुआते रहें। पहले दायां, फिर बायां।

ओं वाङ्.म आस्येऽस्तु।।१।। (मुख को स्पर्श करें)
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु।।२।। (दोनों नथनों को स्पर्श करें)
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।।३।। (दोनों आंखों को स्पर्श करें)
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।।४।। (दोनों कानों को स्पर्श करें)
ओं बाह्योर्मे बलमस्तु।।५।। (दोनों भुजाओं को स्पर्श करें)
ओं ऊर्वो र्मे ओजोऽस्तु।।६।। (दोनों जंघाओं को स्पर्श करें)
ओं अरिष्टानि मे अंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।७।।
(सारे शरीर पर जल के छींटे देवें)

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना के नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ करें –

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रंतन्न आसुव।।१।।
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।२।।
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।।
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।।
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।५।।
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।६।।
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।७।।
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।८।।

यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन करें और चम्मच में कपूर रखकर मंत्र बोलें और कपूर को जलाएं–

ओं भुर्भुवः स्वः।। गोभिल गृ० पू० १। खं० १। सूत्र ११।।

फिर अगले मन्त्र को बोलकर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दें।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।१।।

निम्नलिखित मन्त्र से अग्नि को, घृत तथा छोटी–छोटी समिधा रखकर प्रज्वलित करें।

ओं उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।२।।

तीन आहुति देने के लिए तीन समिधा घृत में भिगोकर रख लें। एकएक मंत्र बोल कर समिधा इस प्रकार अग्नि में चढ़ाएं :–

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।१।। इससे एक समिधा

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। अस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।।
इदमग्नये इदं न मम।।२।।
ससमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।३।।

(इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा)

ओं तन्त्वा समिदि्भरंगिरो समिद्भिरङ्गिरो घृतेन बर्द्धयामसि।
वृहच्छोचायविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम।।४।।

(इससे तीसरी समिधा)

नीचे लिखा मंत्र पांच बार बोलें और हर बार मंत्र के अन्त में एक–एक घृताहुति यज्ञकुण्ड में छोड़ें। इस प्रकार इस मंत्र को पांच बार बोलना है और पांच आहुतियां देनी हैं।

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

अधोलिखित मन्त्रों से वेदी के चारों ओर (हवन कुण्ड के बाहर) मन्त्र के सामने दिये निर्देश के अनुरूप जल छिड़कें। जल अंजलि में ले लिया करें।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व ।।१।। (इससे पूर्व दिशा में)
ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।२।। (इससे पश्चिम में)
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ।। (इससे उत्तर में)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।४।।

यजुर्वेद अ० ३० मं० १।। (वेदी के चारों ओर जल छिड़कें)

आघारावाज्याहुति–निम्नलिखित मन्त्रों से दो घृताहुति देवें।

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।।

(यज्ञकुण्ड के अन्दर उत्तर भाग में अग्नि पर घृताहुति दें।)

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।।२।।

(यज्ञकुण्ड के अन्दर दक्षिण भाग में)

आज्यभागाहुति–इन मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्यभाग में घृताहुति देवेः–

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम ।।१।।
ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम।।२।।

यहां से घृत और हवन–सामग्री दोनों से आहुतियां देनी हैं।

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।१।।
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।

Dr. VivekArya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।३।।
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणःसूर्यो वेतु स्वाहा।।
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।।
ओ भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।।
ओं आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।
ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।।
ओं अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।।
ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।१।।
ओं अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।
ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।३।। (इस मन्त्र को मन में बोल करके तीसरी आहुति देनी चाहिए)

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।।
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्नमम।।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।
ओं आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।

ओं यां मेधां देवगणः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।। य० अ० ३०। मं० ३।।

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

यदि घृत तथा हवन सामग्री बच गयी हो और समय भी हो या अधिक आहुतियां देने की इच्छा हो तो "ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यद् भद्रंतन्न आसुव स्वाहा" से अथवा "ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा" से यथेष्ठ आहुतियां दे सकते हैं। तब पूर्णाहुति उसके बाद कर लें।

पूर्णाहुति–निम्नलिखित मन्त्रों को बोलकर सभी अवशिष्ट हव्य की आहुति दे दें।

ओं सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।।
ओं सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।।
ओं सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।।

-- २ --

प्रातःकाल के यज्ञ की विधि

(उनके लिए जो दोनो समय यज्ञ करते हैं)

आचमन : सीधे हाथ की हथेली में जल भर लें और मंत्र बोलें–

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

(हथेली का जल पी जायें। उसमें दोबारा जल भर लें।)

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा।

(जल पी जायें। पुनः हथेली में जल भर लें।)

मंत्र बोलें –

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम् स्वाहा।

(जल पी जायें और हाथ धोलें।)

अंग–स्पर्श

उलटे हाथ की हथेली में जल लेलें और अपने सीधे हाथ की दो अंगुलियां (बीच वाली तथा छोटी के साथ वाली अनामिका) जल में छुआकर मंत्र बोल कर अपने अंगों से जल का स्पर्श कराते जाएं।)

ओं वाङ्.म आस्येऽस्तु।।१।। (मुख को स्पर्श करें)
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु।।२।। (दोनों नथनों को स्पर्श करें) पहले दायां, फिर बायां।
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।।३।। (दोनों आंखों को स्पर्श करें) पहले दायां, फिर बायां।
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।।४।। (दोनों कानों को स्पर्श करें) पहले दायां, फिर बायां।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु।।५।। (दोनों भुजाओं को स्पर्श करें) पहले दायां, फिर बायां।
ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु।।६।। (दोनों जंघाओं को स्पर्श करें। पहले दायीं, फिर बायीं)
ओं अरिष्टानि मेअगा नि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।७।। (सारे शरीर पर जल के छींटे देवें)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना के नीचे दिए मन्त्रों का पाठ करें–

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रंतन्न आसुव।।१।।
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।२।।
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।।
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।।
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।५।।
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।६।।
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।७।।
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम।।८।।

यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन करें और चम्मच में कपूर रखकर नीचे लिखा मंत्र बोलकर जलायें –

ओं भुर्भुवः स्वः।। गोभिल गृ० पू० १। खं० १। सूत्र ११।।

फिर अगले मन्त्र को बोलकर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दें।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।१।।

निम्नलिखित मन्त्र से अग्नि को, घृत तथा छोटी–छोटी समिधा रखकर प्रज्वलित करें।

ओं उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।२।।

तीन आहुति देने के लिए तीन समिधा घृत में भिगोकर रख लें। एकएक मंत्र बोल कर समिधा इस प्रकार अग्नि में चढ़ाएं :–

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।१।। इससे एक समिधा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
अस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।। इदमग्नये इदं न मम।।२।।
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।३।। (इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा)

ओं तंत्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि। वृहच्छोचायविष्ठ्य स्वाहा।
इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम।।४।। (इससे तीसरी समिधा)

(निम्नलिखित मन्त्र से पांच घी की आहुतियां दें। हर बार मंत्र पूरा होने पर एक एक घृताहुति यज्ञकुण्डमें चढ़ावें। इस प्रकार पांच बारके मंत्र –पाठ से पांच आहुति देनी हैं।)

ओं अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

अधोलिखित मन्त्रों से वेदी के चारों ओर हवनकुण्ड के बाहर, मन्त्र के सामने दिये निर्देश के अनुरूप जल छिड़कें। जल अंजलि में ले लें।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व ।।१।। (इससे पूर्व दिशा में)
ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।२।। (इससे पश्चिम में)
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ।। (इससे उत्तर में)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।४।। यजुर्वेद अ० ३० मं० १।। (इससे वेदी के चारों ओर जल छिड़कें)

आघारावाज्याहुति–निम्नलिखित मन्त्रों से दो घृताहुति देवें:–

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।।
(यज्ञकुण्ड के अन्दर उत्तर भाग में घृताहुति दें।)

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।।२।।
(यज्ञकुण्ड के अन्दर दक्षिण भाग में)

आज्यभागाहुति–इन मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्यभाग में घृताहुति देवें:–

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम ।।१।।
ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम।।२।।

यहां से आरम्भ करके घी तथा सामग्री की आहुतियां साथ साथ दें:–

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।१।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।३।।
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणःसूर्यो वेतु स्वाहा।।
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।।
ओ भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।।
ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।
ओ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।। य०अ० ३०। मं० ३।।

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

नोट : यदि घृत तथा हवनसामग्री अधिक बची हुई हो तथा आप के पास समय भी हो या अधिक आहुति देने की इच्छा हो तो इस सामग्री तथा घी से "ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा" से अथवा "ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा" से जितनी चाहे आहुतियां दे सकते है, तत्पश्चात् पूर्णाहुति करें।

निम्नलिखित मन्त्र को बोलकर अवशिष्ट सभी हव्य की पूर्णाहुति देवें।

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।
ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।
ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।

--३--

सायंकाल के यज्ञ की विधि

(उनके लिए जो दोनो समय यज्ञ करते हैं)

आचमन : सीधे हाथ की हथेली में जल भर लें। मंत्र बोलें–

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

(हथेली का जल पी लें। फिर हाथ में जल भर लें।)

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा। (जल पी लें। फिर हाथ में जल भर लें।)

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम् स्वाहा।

(जल पी जाएं और हाथ धोलें।) (पिछले पृष्ठ पर ले लें)

अंग–स्पर्श – उलटे हाथ की हथेली में जल लेलें और अपने सीधे हाथ की दो अंगुलियां (बीच वाली तथा छोटी के साथ वाली अनामिका) जल में छुआकर– मंत्र बोल कर अपने अंगों से जल का स्पर्श कराते जावें।)

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु।।१।। (मुख को स्पर्श करें)
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु।।२।। (दोनों नथनों को स्पर्श करें) पहले दायां, फिर बायां।
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।।३।। (दोनों आंखों को स्पर्श करें) पहले दायीं, फिर बायीं।
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।।४।। (दोनों कानों को स्पर्श करें) पहले दायां, फिर बायां।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु।।५।। (दोनों भुजाओं को स्पर्श करें) पहले दायां, फिर बायां।
ओं ऊर्वो र्मे ओजोऽस्तु।।६।। (दोनों जंघाओं को स्पर्श करें) पहले दायीं, फिर बायीं।
ओं अरिष्टानि मे अंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।७।। (सारे शरीर पर जल के छींटे देवें)

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना के नीचे दिये मन्त्रों का पाठ करें–

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रंतन्न आसुव।।१।।
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।२।।
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।।
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।।
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।५।।
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।६।।
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।७।।
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।८।।

यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन करें और चम्मच में कपूर रखकर नीचे लिखा मंत्र बोलकर जलायें–

ओं भूर्भुवः स्वः।। गोभिल गृ० पू० १। खं० १। सूत्र ११।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर अगले मन्त्र को बोलकर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दें।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।१।।

निम्नलिखित मन्त्र से अग्नि को, घृत तथा छोटी–छोटी समिधा रखकर, प्रज्वलित करें।

ओं उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।२।।

नीचे लिखे मन्त्रों से तीन समिधा घृत में भिगोकर तीन आहुति देनी हैं। मंत्र बोल–बोल कर एक एक समिधा इस प्रकार अग्नि में चढ़ावें।

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।१।। इससे एक समिधा

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।। इदमग्नये इदं न मम।।२।।
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।३।। (इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा)
ओं तन्त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि। वृहच्छोचायविष्ठ्य स्वाहा।
इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम।।४।। (इससे तीसरी समिधा)

निम्नलिखित मन्त्र से पांच घी की आहुतियां दें। हर बार मंत्र पूरा होने पर एक एक घृताहुति यज्ञकुण्ड में चढ़ावें। इस प्रकार पांच बार के मंत्र पाठ से पांच आहुति देनी हैं।

ओं अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

अधोलिखित मन्त्रों से वेदी के चारों ओर यज्ञ कुण्ड से बाहर, मन्त्र के सामने दिये निर्देश के अनुरूप अंजलि में ले कर जल छिड़कें।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व ।।१।। (इससे पूर्व दिशा में)
ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।२।। (इससे पश्चिम में)
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ।। (इससे उत्तर में)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।४।। यजुर्वेद अ० ३० मं० १।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(इससे वेदी के चारों ओर जल छिड़कें)

आघारावाज्याहुति–निम्नलिखित मन्त्रों से दो घृताहुति देवें।

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।।

(यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में अग्नि में घृताहुति दें।)

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।।२।।

(यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में अग्नि में)

आज्यभागाहुति–इन मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्यभाग में घृताहुति देवें।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।।१।।
ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम।।२।।

यहां से आगे हवन–सामग्री की आहुतियां भी देते जावें।

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।१।।
ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।
ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।३।। (इस मन्त्र को मन में बोल कर के तीसरी आहुति देनी चाहिए)

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।।
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।।
ओं आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।
ओं यां मेधां देवगणः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।। य० अ० ३०। मं० ३।।

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

यदि घृत तथा हवन सामग्री बची हुई हो और आपके पास समय भी हो या अधिक आहुतियां देने की इच्छा हो तो इस बचे द्रव्य से "ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद भद्रंतन्न आसुव स्वाहा" से अथवा "ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वाहा से यथेष्ठ आहुतियां दे सकते हैं। उसके पश्चात् पूर्णाहुति करें।

निम्नलिखित मन्त्र को बोलकर अवशिष्ट सभी हव्य पूर्णाहुति कर दें।

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।
ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।
ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।

-- ४ --

विशेष यज्ञ की विधि

इस यज्ञ में लगभग एक घण्टे का समय लगता है। इसलिए जितना समय आप के पास है उसी के हिसाब से यज्ञ कीजिए।

यदि ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना, स्वस्ति वाचन और शान्ति प्रकरण तीनों का पाठ करने का समय न हो तो शांतिकरण या स्वस्तिवाचन में से एक छोड़ दें। यदि इतना समय भी न हो तो स्वस्तिवाचन तथा शांतिकरण दोनों छोड़ कर शेष यज्ञ कर लें।

अथ ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना

पाठ आरम्भ करें:—

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।।१।। यजु०अ०३०। मन्त्र ३।।

अर्थः— हे (सवितः) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त (देव) शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर। आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परा सुव) दूर कीजिए (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, (तत्) वह सब हमको (आ सुव) प्राप्त कीजिए।

तू सर्वेश, सकल सुख दाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते जो तेरे ढिंग आता है।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से हमको नाथ बचा लीजे।
मंगलमय गुण कर्म पदारथ प्रेम—सिन्धु हमको दीजे।।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।२। यजु०अ० १३।मन्त्र ४।।

अर्थः— जो (हिरण्यगर्भः)स्वप्रकाशस्वरुप, और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतनस्वरूप (आसीत्) था, जो (अग्रे) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्तत) वर्तमान् था, (सः) वह (इमाम्) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत) और (द्याम्) सूर्यादि को (दाधार) धारण कर रहा है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरुप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिये (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से (विधेम) भक्ति विशेष किया करें।।२।।

तू ही स्वयंप्रकाश, सुचेतन, सुख स्वरूप शुभ त्राता है।
सूर्य –चन्द्र लोकादिक को तू रचता और टिकाता है।।
पहिले था अब भी तू ही है घट–घट में व्यापक स्वामी।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको पावें हम अन्तर्यामी।।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।३।

–यजु०अ० २५। मन्त्र १३।।

अर्थ– (यः) जो (आत्मदा) आत्मज्ञान का दाता, (बलदा) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने हारा, (यस्य) जिसकी (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोग (उपासते) उपासना करते हैं, और (यस्य) जिसका (प्रशिषम्) प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं। (यस्य) जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही (मृत्युः) मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) आत्मा और अन्तः करण से (विधेम) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।।३।।

तू ही आत्मज्ञान बल दाता, सुयश विज्ञ जन गाते हैं।
तेरी चरण– शरण में आकर भवसागर तर जाते हैं।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे विसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।।

–यजु० अ० ३२ मन्त्र ३।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

अर्थ– (यः) जो (प्राणतः) प्राण वाले और (निमिषतः) अप्राणिरूप

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(जगतः) जगत् का (महित्वा) अपनी अनन्त महिमा से (एक इत्) एक ही (राजा) राजा (बभूव) विराजमान है; (यः) जो (अस्य) इस (द्विपदः) मनुष्यादि और (चतुष्पदः) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (ईशे) रचना करता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात् (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञापालन में समर्पित करके (विधेम) विशेष भक्ति करें।।४।।

तूने अपनी अनुपम माया से जग – ज्योति जगाई है।
मनुज और पशुओं को रचकर निज महिमा प्रगटाई है।।
अपने हृदय – सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं।
भक्ति भाव की भेंटें लेकर तव चरणों में आते हैं।।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

–यजु० अ० ३२।मन्त्र ६।।

अर्थ– (येन) जिस परमात्मा ने (उग्रा) तीक्ष्ण स्वभाव वाले (द्यौः) सूर्य आदि (च) और (पृथिवी) भूमि को (दृढा) धारण किया, और (येन) जिस ईश्वर ने (नाकः) दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है; (यः) जो (अन्तरिक्षे) आकाश में (रजसः) सब लोक–लोकान्तरों को (विमानः) विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे लोकों को निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिये (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष भक्ति करें।५।

तारे, रवि चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख लखाया है।।
तू ही विश्व विधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान करें।
शुद्ध भाव से भगवन्! तेरे भजनामृत का पान करें।।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।

–ऋ० मण्डल १० सू० १२६। मं० १०

अर्थ– हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी परमात्मा! (त्वत्) आपसे (अन्यः) भिन्न दूसरा कोई (ता) उन (एतानि) इन (विश्वा) सब (जातानि) उत्पन्न हुए भूगोलादि जगत् का (बभूव) स्वामी हो और (परिता) व्यापक (न) नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(बभूव) है, (जो) उस आपके भक्ति करने हारे हम चेतनादिकों को (न) नहीं (परि बभूव) तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। (यत्कामाः) जिस जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग भक्ति करें, (ते) आपका (जुहुमः) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, (तत्) वह कामना (नः) हमारी सिद्ध (अस्तु) होवे, जिससे (वयम्) हम लोग (रयीणम्) धनैश्वर्यों के (पतयः) स्वामी (स्याम) होवें।

तुझसे भिन्न न कोई जग में, सब में तूही समाया है।
जड़ चेतन जग तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।।
हे सर्वोपरि विभो ! विश्व का, तूने साज सजाया है।
हेतु रहित अनुराग दीजिये यही भक्त को भाया है।।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।७। –यजु० ३२।मं० १०।।

अर्थ– हे मनुष्यो! (सः) वह परमात्मा (नः) अपने लोगों को (बन्धुः) भ्राता के समान सुखदायक, (जनिता) सकल जगत् का उत्पादक, (सः) वह (विधाता) सब कामों को पूर्ण करने हारा, (विश्वा) सम्पूर्ण (भुवनानि) लोकमात्र और (धामानि) नाम, स्थान, जन्मों को (वेद) जानता है और (यत्र) जिस (तृतीये) सांसारिक सुख–दुःख से रहित नित्यानन्द युक्त (धामन्) मोक्ष स्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में (अमृतम्) मोक्ष को (आनशानः) प्राप्त होके (देवाः) विद्वान् लोग (अध्यैरयन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।।७।।

तू ही गुरु, प्रजेश भी तू , पाप –पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।।
भक्तों को इस भव–बन्धन से, तूही मुक्त कराता है।
तू है अज, अद्वैत, महाप्रभु सर्वकाल का ज्ञाता है।।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।८।।

–यजु० अ० ४०।१। मन्त्र १६।।

अर्थ– हे (अग्ने) स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने हारे (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर! आप (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi.

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राप्ति के लिए (सुपथा) अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्राप्त कराइये और (अस्मत्) हमसे (जुहुराणम्) कुटलतायुक्त (एनः) पापरूप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिये, हम लोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार की स्तुति रूप (नमः उक्तिम्) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें, और सर्वदा आनन्द में रहें।।८।।

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सबका सिरजनहार तूही।
रसना निशि–दिन रटे तुम्हीं को, मनमें बसना सदा तूही।।
अघ – अनर्थ से हमें बचाते रहना, हर दम दयानिधान।
अपने भक्त जनों को भगवन्, दीजे यही विशद वरदान।।

स्वस्तिवाचन

ओं अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।१।।
स नः पितेव सुनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये ।।२।।
ऋ० मं० १। सू० १। मं० १,९।।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।।३।।
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।।४।।
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।५।।
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।।६।।
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।।७।।
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।८।।
येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये।।९।।
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा वृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।१०।।
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये।।११।।
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये।।१२।।
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्वतये।।१३।।
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः।
ते नः कृतादकृतादेन सस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये।।१४।।
भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।।१५।।
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमारुहेम स्वस्तये।।१६।।
विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।।१७।।
अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये।।१८।।
अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।१९।।
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये।।२०।।
स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन।।२१।।
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति।
सा नो अमा सो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा।।२२।।
इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावती-
रनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशँसो ध्रुवा अस्मिन्
गोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।२३।। यजु० १।१।।
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।२४।।

CC-0. Vedic Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाँ रातिरभि नो निवर्त्तताम्।
देवानाँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२५।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।२६।।
स्वास्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।२७।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।२८।।
यजु० अ० २५। मं० १४।१५।१८।१९।२१।।

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।।२९।।
त्वमग्ने यज्ञानाँ होता विश्वेषाँ हितः देवेभिर्मानुषे जने।।३०।।
साम० पूर्वा० प्रपा० १। द० १ । मं० १, २।।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ।।३१।।
अथर्व० कां० १।।

ॐ अथ शान्तिकरणम् ॐ

ओं शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः शंन इन्द्रापूषणा वाजसातौ।।१।।
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धि शमु सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु।।२।।
शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।३।।
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्।
शं न सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः।।४।।
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।५।।
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु।।६।।
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।७।।
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।८।।
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।।९।।
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभाती।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।।१०।।
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।११।।
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।१२।।
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः।।१३।।
इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।१४।।
शंनो वातः पवताँ शं नस्तपतु सूर्य्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु।।१५।।
अहानि शं भवन्तु नः शँ रात्रीः प्रति धीयताम्।
शं ॅनऽ इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शंनऽइन्द्रावरुणा रातहव्या।।
शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः।।१६।।
शन्नोदेवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।।१७।।
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति–
रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि।।१८।।
तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं।
जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।१९।।
यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२०।।
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२१।।
यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२२।।
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२३।।
यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२४।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन ऽ इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२५।।
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शँ राजन्नोषधीभ्यः।।२६।। साम० उत्तरा० प्रपा० १। मं ३।।२६।।
अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।२७।।
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।२८।।

यज्ञ-पद्धति

प्रथम निम्नलिखित मन्त्रों से तीन आचमन करें। जल सीधे हाथ की हथेली में लेवें।

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।१।। इससे पहला
ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा।।२।। इससे दूसरा
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।।३।। इससे तीसरा

उलटे हाथ में जल लें। सीधे हाथ की अंगुलियों से जल छूकर अंग स्पर्श करें।

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु।।१।। (मुख को स्पर्श करें)
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु।।२।। (दोनों नथनों को स्पर्श करें)
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।।३।। (दोनों आंखों को स्पर्श करें)
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।।४।। (दोनों कानों को स्पर्श करें)
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु।।५।। (दोनों भुजाओं को स्पर्श करें)
ओं ऊर्वोर्मऽओजोऽस्तु।।६।। (दोनों जंघाओं को स्पर्श करें)
ओं अरिष्टानि मे अंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।७।। (सारे शरीर पर जल के छींटे देवें)

यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन करें और चम्मच में कपूर रखकर निम्न मंत्र बोलकर, जलायें–

ओं भुर्भुवः स्वः। (गोभिल गृ० पू० १। खं० १। सूत्र ११।।)

फिर अगले मन्त्र को बोलकर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दें।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।१।।

निम्नलिखित मन्त्र से, अग्नि को घृत तथा छोटी–छोटी समिधा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रखकर प्रज्वलित करें।

ओं उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।२।।

तीन समिधा घृत में भिगोकर रख लें। मंत्र बोल कर एक एक समिधा इस प्रकार अग्नि में चढ़ावें :–

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।१।। इससे एक समिधा

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
अस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।। इदमग्नये इदं न मम।।२।।

(समिधा नही डालनी)

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।३।। (दूसरी समिधा)

ओं तन्त्वा समिध्दिरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचायविष्ठ्य स्वाहा।
इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम।।४।। (इससे तीसरी समिधा)

(निम्नलिखित मन्त्र से पांच घी की आहुतियां दें:–

यही मंत्र पांच बार बोलें और हर बार मंत्र के अन्त में एक–एक घृताहुति यज्ञकुण्ड में छोड़ें। इस प्रकार इस एक ही मंत्र से पांच आहुतियां देनी हैं।

ओं अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

अधोलिखित मन्त्रों से वेदी के चारों ओर हवन कुण्ड के बाहर मन्त्र के सामने दिये निर्देश के अनुरूप जल छिड़कें। जल अंजलि में ले लें।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व ।।१।। (इससे पूर्व दिशा में)
ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।२।। (इससे पश्चिम में)
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ।। (इससे उत्तर में)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।४।।
यजुर्वेद अ० ३० मं० १।। (इससे वेदी के चारों ओर जल छिड़कें)

आघारावाज्याहुति – निम्नलिखित मन्त्रों से दो घृताहुति देवें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।।

(यज्ञकुण्ड के अन्दर उत्तर भाग में घृताहुति दें।)

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।।२।।

(यज्ञकुण्ड के अन्दर दक्षिण भाग में)

आज्यभागाहुति –इन मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्यभाग में घृताहुति देवें

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम ।।१।।
ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम।।२।।

❋ महा व्याहृत्याहुति मन्त्र ❋

ओं भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।।१।।
ओं भूवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदन्न मम।।२।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय इदन्न मम।।३।।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्नि वाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम।।४।।

निम्नलिखित मंत्र से स्विष्टकृत् आहुति घृत अथवा भात की देनी चाहिए :–

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।।

प्राजापत्याहुति नीचे लिखे मन्त्र को मन में बोल कर देनी चाहिये।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।।

प्रधान होम सम्बन्धी चार आहुतियां घृत की इन मन्त्रों से देवें :–

ओं भूर्भवः स्वः अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे वाधस्व दुच्छुनां स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।१।।
ओं भूर्भवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदम मम।।२।।
ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।३।।
ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।।४।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब हवन–सामग्री की आहुतियां भी साथ साथ दें :–

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां इदन्न मम।।१।।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां इदन्न मम।।२।।

ओं इमं में वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा। इदं वरुणाय इदन्न मम।।३।।

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय इदन्न मम।।४।।

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम।।५।।

ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजँ स्वाहा।। इदमग्नये अयसे इदन्न मम।।६।।

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च इदन्न मम।।७।।

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं हिं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्यां इदन्न मम।।८।।

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।१।।
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।३।।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणःसूर्यो वेतु स्वाहा।।
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्नमम।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।
ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।

ओ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

ओं विश्वानिदेव सवितर्दुरितानी परासुव, यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।।
ओं अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।।
यदि सांय काल यज्ञ न करना हो तो ये मंत्र भी बोल लें।

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।१।।
ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।
ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।३।। (इस मन्त्र को मन से बोल करके तीसरी आहुति देनी चाहिए।)

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।।
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।
ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।
ओं यां मेधां देवगणः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।। य० अ० ३०। मं० ३।।

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम स्वाहा।

यदि घृत तथा हवन सामग्री बची रह गई हो या अधिक आहुतियां देने की इच्छा हो तो गायत्री मंत्र **"ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं मर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा"** से यथेष्ट आहुतियां दे सकते हैं। तत्पश्चात् पूर्णाहुति करें।

निम्नलिखित मन्त्र को बोलकर अवशिष्ट सभी हव्य पूर्णाहुति कर दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस रीतिसे कम से कम तीन, अधिक से अधिक इक्कीस प्राणायाम करे। पश्चात् सृष्टिकर्त्ता परमात्मा और सृष्टिक्रम का विचार नीचे लिखे मंत्रों से करे और जगदीश्वर को सर्वव्यापक न्यायकारी सर्वत्र सर्वदा सब जीवों के कर्मों के द्रष्टा को निश्चित मान के, पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवे, किन्तु सदा धर्मयुक्त कर्मों में वर्तमान रक्खे।" मनसा परिक्रमा के छः मन्त्रों के पश्चात्, महर्षि फिर लिखते हैं "इन मंत्रों को पढ़ते जाना, और अपने मन से चारों ओर, बाहर–भीतर, परमात्मा को पूर्ण जान कर निर्भय–निशंक–उत्साही–आनन्दित–पुरुषार्थी रहना तत्पश्चात् परमात्मा का उपस्थान–अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निकट परमात्मा है– ऐसी बुद्धि करके करे।"

"इन मंत्रों से परमात्मा का उपस्थान करके पुनः (शन्नो देवी..... इस मंत्र से) तीन आचमन करके अथवा गायत्री मंत्र के अर्थ विचारपूर्वक परमात्मा की स्तुति प्रार्थनोपासना करे। पुनः हे परमेश्वर ! दयानिधे ! आप की कृपा से जपोपासना आदि कार्यों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें। पुनः नमः शम्भवाय.... इस मंत्र से परमात्मा को नमस्कार करके–तब अग्निहोत्र का आरम्भ करें।" (संस्कार विधि, गृहस्थ प्र०)

पाठक थोड़ा सा भी विचार करेंगे तो स्पष्ट हो जायगा कि सन्ध्या वास्तव में ईश्वर से मिलन की क्रिया है। योग है। सन्ध्या और योग दोनों के एक ही शब्दार्थ हैं। सन्ध्या का अर्थ है ईश्वर से सन्धि करना, मिलना और योग का भी यही अर्थ है– ईश्वर से मिलना–योग करना। इसी कारण सन्ध्या का इतना महत्त्व है।

सन्ध्यायन्ति परब्रह्म यस्यां सा सन्ध्या। जिसमें भलीभांति ध्यान करते हैं या जिस में परमेश्वर का भली प्रकार ध्यान किया जाता है उस का नाम सन्ध्या है।

महर्षि ने प्रत्येक गृहस्थ को गृहस्थ में रहते हुए ही योगी बनने की कामना की है। प्रत्येक गृहस्थ गृहस्थ–धर्म का पालन भी करता रहे और योगी भी हो जाय ताकि वानप्रस्थी और सन्यासी होने पर उसे मोक्ष का द्वार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खुला मिले।

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं हि सन्ध्या वेदशाखा धर्मकर्मणिपत्रम्। तस्मान्मूलं यत्नतोरक्षणीयं छिन्ने मूले नैवशाखा न पत्रम्।। (चाणक्य)

ब्राह्मण वृक्ष है उस की जड़ सन्ध्या है। वेद शाखाएं हैं। धर्म पत्ते हैं। इसलिए यत्नपूर्वक जड़ की रक्षा करनी चाहिए। जड़ नष्ट हो गई तो न ब्राह्मण बचेगा न क्षत्रिय। न वेद बचेगा न धर्म। इसी कारण सन्ध्या ब्रह्म यज्ञ है, ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग है।

सन्ध्या (ब्रह्म यज्ञ)

प्रातः काल शौच, वायु सेवन, दन्त धावन, तैल मर्दन तथा स्नान करके पवित्र मन और एकाग्रचित्त होकर कम से कम तीन प्राणायाम करे पुनः गायत्री मंत्र पढ़ कर शिखा बन्धन करें।

निम्न मंत्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन बार आचमन करें।

ओं शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।।

इन्द्रिय, स्पर्श मंत्र

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः ।
ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः ।
ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे।

मार्जन मंत्र

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः।
ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये।
ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः।
ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

प्राणायाम मंत्र

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अघमर्षण मंत्र

ओं ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।१।।
ओं समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।२।।
ओं सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ।।३।।

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः ।।

(इस 'शन्नो देवी ०' मन्त्र से तीन आचमन करें)

निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति प्रार्थना करें।

मनसा परिक्रमा मन्त्र

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिताऽऽदित्या इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो
अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। १ ।।

ओं दक्षिणादिगिन्द्रोऽधिपतिस्तरश्चिराजी रक्षिता पितर
इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम
एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।२।।

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो
अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।३।।

ओं उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो
अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।४।।

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध
इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम
एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।५।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओं ऊर्ध्वादिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो
अस्तु। योऽस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।६।।

उपस्थान मन्त्र

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।१।।

ओम् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम्।।
ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।
ओम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं
जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।४।।

गायत्री मन्त्र

ओम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। यजु० अ० ३६।। मं० ३।।

अथ समर्पण

हे ईश्वर दयानिधे ! **भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।**

हे ईश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें।

(इसके पीछे ईश्वर को नमस्कार करे)

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।१।।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नित्य कर्म विधि

निम्न दस आहुतियां चूल्हे की अग्नि में देनी हैं। चूल्हा न हो तो यज्ञ–कुण्ड में ही दे दें। गृहस्थ बिना बलिवैश्व यज्ञ के भोजन नहीं करते।

बलिवैश्वदेवयज्ञ–मन्त्राः

रसोई में बने (क्षार, लवण रहित) घृतमिष्टयुक्त अन्न से पाकाग्नि में निम्नलिखित मन्त्रों से आहुतियाँ देवें –

ओम् अग्नये स्वाहा।।१।।
ओं सोमाय स्वाहा।।२।।
ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।।३।।
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।४।।
ओं धन्वन्तरये स्वाहा।।५।।
ओं कुह्वै स्वाहा।।६।।
ओम् अनुमत्यै स्वाहा।।७।।
ओं प्रजापतये स्वाहा।।८।।
ओं द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा।।९।।
ओं स्विष्टकृते स्वाहा।।१०।।

तत्पश्चात् घृत सहित लवणान्न लेके –

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां च कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि।।

(मनु० ३।९२)

अर्थ – कुत्तों, कगांलों, चण्डालों, कुण्डी आदि रोगियों, काक आदि पक्षियों, और चींटी आदि कृमियों के लिये छः भाग अलग अलग बांट के देवे और उनको सदा प्रसन्न रक्खें।

अथ पाक्षिक यज्ञ अमावस्या-पूर्णिमा

पौर्णमासी या अमावस्या का दिन हो तो दैनिक अग्निहोत्र की आहुतियां दिये पश्चात् स्थालीपाक से (भात, खिचड़ी, खीर, लड्डू, मोहनभोग आदि से) निम्नलिखित मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ पूर्णाहुति से पूर्व देदिया करें। (नमक तथा क्षार अग्नि में न डालें)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पौर्णमासी-यज्ञ की विशेष आहुतियाँ

ओम् अग्नये स्वाहा।।१।।
ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।।२।।
ओं विष्णवे स्वाहा।।३।।

इन तीन मन्त्रोंसे स्थालीपाक की तीन आहुतियाँ देनी चाहिये तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से चार व्याहृति आज्याहुतियाँ घृत की देनी चाहिये–

ओं भूरग्नये स्वाहा।। इदमग्नये इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवे स्वाहा।। इदं वायवे इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय इदन्न मम।।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम।।

अमावस्या-यज्ञ की विशेष आहुतियाँ

(दैनिक यज्ञ कर के पूर्णाहुति से पूर्व दे देवें।)

ओम् अग्नये स्वाहा।।१।।
ओम् इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा।।२।।
ओं विष्णवे स्वाहा।।३।।

इन मन्त्रों से स्थालीपाक की आहुति देके पूर्वोक्त पौर्णमासयज्ञ की तरह घी की चार उपर्युक्त व्याहृति आज्याहुतियाँ भी देवें। इस प्रकार पक्ष–यज्ञ की आहुतियाँ देकर पूर्णाहुति कर यज्ञ की समाप्ति करें।

यज्ञ के पश्चात् बोलने योग्य प्रार्थना मन्त्र व श्लोक–

(१) ओं तनूपाऽग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।
ओम् आयुर्दाऽग्नेऽस्यायुर्मे देहि।
ओं वर्चोदाऽग्नेऽसि वर्चो मे देहि।
ओम् अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण।।

(२) ओं तेजो ऽ सि तेजो मयि धेहि।
ओं वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
ओं बलमसि बलं मयि धेहि।
ओम् ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
ओं मन्युरसि मन्युर्मयि धेहि।
ओ सहोऽसि सहो मयि धेहि।।

CC-0. Vivekanand Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(३) ओं यत्तेऽग्ने तेजस्तेनाऽहं तेजस्वी भूयासम्।
ओं यत्तेऽग्ने वर्चस्तेनाऽहं वर्चस्वी भूयासम्।
ओं यत्तेऽग्ने हरस्तेनाऽहं हरस्वी भूयासम्।।

(४) ओं मेधां देवः मे सविता आददातु।
ओं मेधां मे देवी सरस्वती आददातु।
ओं मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।।

(५) त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव। त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

(६) सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

(७) असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

भोजन करने से पूर्व बोलें

ओम् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।। (यजु० ११। ८३)

(सोते समय बोलने के मन्त्र)

शिव-संकल्प-मन्त्राः

सारा परिवार – बिस्तर पर बैठकर ये मंत्र मिल कर बोले –

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।१।।
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२।।
यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु।
यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।३।।
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।४।।
यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तꣳसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।५।।
सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरञ्जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।६।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

(यजु० अ० ३४।मं० १–६)

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रातःकाल के मंत्र

(बिस्तर में बैठे बैठे ही ये मंत्र बोल लें)

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम।।१।।
ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
अध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजाचिद्यं भगं भक्षीत्याह।।२।।
ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नवन्तः स्याम।।३।।
ओं उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्र पित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।।४।।
ओं भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।।५।।

वैदिक राष्ट्रिय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां। दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

(यजु० अ० २२। मं० २२)

राष्ट्रिय भजन

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी।।
होवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी।
हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।।

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शान्तिपाठः

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति –
रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

शान्ति–गीत (१)

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में। शान्ति कीजिये०।।
जल में थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
ओषधि वनस्पति वन उपवन में,
सकल विश्व में जड़ चेतन में।। शान्ति.....
ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों होवे के धन में,
और शूद्र के हो चरणन में।। शान्ति.....
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में,
नगर ग्राम में और भवन में।
जीवमात्र के तन में मन में,
और जगति के हो कण कण में।। शान्ति.....

भजन (यज्ञ–महिमा) (२)

पूजनीय प्रभो हमारे, भाव ऊज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए।।१।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक – सागर से तरें।।२।।
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर–उपकार को।
धर्म – मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।३।।
नित्य श्रद्धा – भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग – पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें।।४।।
भावना मिट जाये मन से, पाप अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नर – नारि की।।५।।
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये।।६।।
स्वार्थ – भाव मिटे हमारा, प्रेम–पथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।७।।
प्रेमरस में मग्न होकर, वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप! करुणा, आपकी सब पर रहे।।८।।

भजन (३)

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन्! पूरी होय।।
विद्या – बुद्धि तेज बल, सबके भीतर होय।
दूध पूत धन– धान्य से, वञ्चित रहे न कोय।।
आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग – द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।
मिले भरोसा आपका, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे नाम की, बनी रहे मम ईश।।
पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनायकर, सबको करो निहाल।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम–अपार।
धैर्य हृदय में धीरता, सबको दो करतार।।
नारायण तुम आप हो, कष्ट के मोचन हार।
दूर भगा दो पाप सब, कर दो भव से पार।।
हाथ जोड़ विनति करूँ, सुनिये कृपा निधान।
साधु–संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान।।

भजन (४)

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।।१।।
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो।।२।।
भूलि हैं हम ही तुम को तुम तो, हमरी सुधि नाहिं विसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।३।।
महाराज महा महिमा तुमरी, समझे विरले बुधवारे हो।
शुभ शान्ति–निकेतन प्रेमनिधे, मन–मन्दिर के उजियारे हो।।४।।

CC-0. Vedic Harvest Fund. Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय कृपालु सखा, केहि के अब और सहारे हों।।५।।

भजन (५)

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद।
जिस का यश नित गाते हैं, गन्धर्व गुणीजन धन्यवाद।।१।।
मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ – सौ, बार मुनिवर धन्यवाद।।२।।
करते हैं जंगल में मंगल, पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल, गाते हैं स्वरभर धन्यवाद।।३।।
कूप में तालाब में, सिन्धु की गहरी धार में।
प्रेम – रस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद।।४।।
शादियों में कीर्त्तनों में, यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर से चाहिये, करें नारी–नर सब धन्यवाद।।५।।
गान कर 'अमीचन्द', भजनानन्द ईश्वर की स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर–धर धन्यवाद।।६।।

भजन (६)

जय जय पिता परम आनन्ददाता,
जगदादिकारण मुक्तिप्रदाता।।१।।
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे,
तू सृष्टि का स्रष्टा तू धर्त्ता संहर्त्ता।।२।।
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना,
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।।३।।
मैं लालित व पालित हूँ पितृस्नेह का,
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझ से ताता।।४।।
करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को,
करूँ मैं विनय नित्य सायं व प्रातः।।५।।
मिटाओ मेरे भय आवागमन के,
फिरूँ न जन्म पाता और बिलबिलाता।।६।।
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु,
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता।।७।।
"अमी" रस पिलाओ कृपा करके मुझको,
रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता।।८।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओम्–ध्वज गान (८)

जयति ओम्–ध्वज व्योम विहारी, विश्व–प्रेम प्रतिमा अतिप्यारी।
सत्य – सुधा बरसाने वाला, स्नेह – लता सरसाने वाला।
साम्य – सुमन विकसाने वाला, विश्व विमोहक भवभय हारी।।
इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी।।
इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम तरंग बहे सुखकारी।।
इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊँच – नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर, पन्थाई पाखण्ड विसारी।।
इसी ध्वजा को लेकर कर में, भरदें वेद ज्ञान घर – घर में।
सुभग शान्ति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अँधियारी।।
विश्व – प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन – ज्योति जगावें, त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी।।
आर्य जाति का यश अक्षय हो,आर्य ध्वजा की अविचल जय हो,
आर्यजनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी।।

यजमान के प्रति मंगल कामना (९)

सदा फूलता फलता भगवन्, यह याजक –परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इनका, सदा आपसे प्यार रहे।।१।।
मिथ्या कर अभिमान कभी न, जीवन का अपमान करें।
देवजनों की सेवा करके, वेदामृत का पान करें।।
प्रभु आपकी आज्ञा – पालन, करता हर नर–नार रहे।।२।।
मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको मानें आपकी।
घड़ी न आने पावे इन पै, कोई भी सन्ताप की।।
यही कामना प्रभु आपसे, कर हम बारम्बार रहे।।३।।
दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों।
सेवा के सांचे में सबने, जीवन अपने ढाले हों।।
बच्चा – बच्चा परिवार का, बनकर श्रवणकुमार रहे।।४।।
बने रहें सन्तोषी सारे, जीवन के हर काल में।
हाल – चाल हो कैसा इनका, रहें मस्त हर हाल में।।
ताकि 'देश' बसाया इनका, सुखदायी संसार रहे।।५।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकार विचार करके वसुदेवने एक भविष्य–द्रष्टा राजनीतिज्ञ के समान विचारपूर्वक मंथन करके अपनी एक पत्नी रोहिणी को तो प्रसव से पूर्व ही गुप्त रूप से नन्द ग्राम में बसा दिया तथा अपनी दूसरी पत्नियों को भी गुप्त रूप से सुरक्षित दूसरे स्थानों पर भेज दिया।

परम बुद्धिमान वसुदेव जी ने राजा कंस को चकमा देकर गोकुल में अपने पुत्र वासुदेव का पालन करवाया। सभा० ३६–११

एवं तं वञ्चयित्वा च राजानं स महामतिः
वासुदेवं महात्मानं वर्धयामास गोकुले। सभा० ३६–११–७३२

हे योगमाया सुन "रोहिणी वासुदेवस्य भार्याऽऽस्तेनन्द गोकुले
अन्याश्च कंस संविग्नाविवरेषु वसन्ति हि।। श्रीमद्भागवत् १०–२–७–१२३

"वहां नन्द बाबा के गोकुल में रोहिणी देवी वास करती हैं। उसकी अन्य पत्नियां भी कंस से डर कर गुप्त स्थानों में रह रही हैं।"

श्रीकृष्ण के जन्म की भी किसी को कानों–कान ख़बर नहीं लगने दी गई। उसे भी गुप्त रूप से नन्द ग्राम में ही सुरक्षित कर दिया गया। जब किसी को यह पता ही नहीं कि वसुदेव के कोई सन्तान भी है तो उन सन्तानों पर राजनीति के कारण आने वाले भय तो स्वतः नष्ट हो गए। वसुदेव के पुत्रों को लोग और स्वयं राजा कंस तक भी नन्द की ही सन्तानें जानते और मानते थे।

३– वसुदेव स्वयं कंस से दूर रह नहीं सकते थे। यदि दूर चले जाते तो कंस की गतिविधियों का पता कैसे चलता ? विद्रोह का संचालन मथुरावास के बिना संभव नहीं था।

उग्रसेन से सम्पर्क टूट जाता तो विद्रोह का मुद्दा ही हाथ से निकल जाता। जहां मथुरा में रहना वसुदेवकी मजबूरी थी वहीं मथुरा में एक सुविधा भी थी। देवकी राजा कंस की बहिन थी। उसके रहते सारे कार्य सरलता से कम से कम सन्देह पैदा किए, सम्पन्न किए जा सकते थे। यह देवी देवकी ही तो वसुदेव की सुरक्षा का सबसे कठोर कवच थी। इस बात की पूरी सम्भावना है कि मथुरा–वास के कारण ही कंस की नीति की भनक वसुदेव के कानों में पड़ गई और वसुदेव एकदम चौकन्ने हो गए। इधर उनका उग्रसेन से सम्पर्क था, उधर वे नन्द द्वारा सीधे विद्रोहियों के सम्पर्क में थे।

४– एक उदाहरण लें। जब नन्द बाबा मथुरा में आए, तब वसुदेव ने उनके कान में कुछ गुप्त बात कही। नन्द–यशोदा बात सुनते ही सवारी पर बैठ गए और गोकुल को लौट चले। मार्ग में नन्द सोचते जाते थे कि वसुदेव जी की सूचना असत्य तो हो नहीं सकती। इसलिए नन्द जी का मन उत्पात की आशंका से भर गया। वे बार–बार सोचने लगे कि पूतना को कस ने नियुक्त किया है:–

नन्दः पथि वचः शौरेर्न मृषेतिविचिन्तयन्। हरिः जगाम शरणमुत्पातागमशंकितः
कंसेन प्रहिता घोरा पूतना बालघातिनी। (श्रीमद्भागवत् १०–६–१–२–१४१)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नन्द और गोपों ने गोकुल में पहुंचकर जब पूतना का भयंकर शरीर देखा तब वे तो आश्चर्यचकित हो गए– "महानाश्चर्य है–वसुदेव के रूप में या तो किसी ऋषि ने जन्म लिया है या फिर वसुदेव जी पूर्व जन्म में कोई योगेश्वर रहे होंगे। जैसा उन्होंने बताया था, वैसा ही उत्पात देखने में आ रहा है।"

विलोक्य पूतनादेहं बभूवुरति विस्मिताः नूनं वतर्षिः संजातो योगेशो व समाससः स एव दृष्टो ह्युत्पातो यदाहानकदुन्दुभिः।। (श्रीमद्भागवत् १०–६–३१–३२–१५४)

पूतना को कंस ने नियुक्त किया था। उसके आगमन की सूचना वसुदेव ने नन्द तक पहुंचा दी थी।

५–परन्तु कंस को तो षड्यंत्र का पता नहीं था। यदि नारद जी देवताओं द्वारा उसकी हत्या की साज़िश की बात न बताते तो वह तो और बुरी तरह मारा जाता। नारद जी से सूचना पाकर कंस ने वसुदेव को परास्त करने की एक विचित्र योजना बना डाली। वसुदेव जैसे प्रभावशाली पर हाथ डालना तो अपने को खतरे में डालना तो होता ही, साथ ही नीति–विरुद्ध भी होता। पिता से राज्य छीनने पर उसके सारे सगे सम्बन्धी उससे मुख मोड़ कर बैठ ही गए थे और आज पनप रहा सारा विद्रोह उसी एक कर्म का परिणाम था। अब वसुदेव को कारागार में डालकर वह जनाक्रोश की अग्नि में और घी नहीं डालना चाहता था। उसने निर्णय किया कि मैं सबके सामने तो अपने को षड्यन्त्र की जानकारी से सर्वथा अनभिज्ञ प्रकट करूंगा ताकि मैं जो कुछ करने जा रहा हूं उस पर कोई सन्देह कर ही न सके और दूसरी ओर उसने ऐसी व्यवस्था कर दी कि देवकी–वसुदेव की सन्तानें उसके कब्ज़े में आ जायें ताकि एक बार सन्तानें उसके हाथ लग जाएं तो वह वसुदेव–देवकी को तिगनी का नाच नचा डाले।

इसीलिए तो कंस ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वसुदेव–देवकी की खूब सेवा करो, उन्हें स्वच्छन्द विचरण करने दो, उनके मार्ग में सुविधाएं विछा दो ताकि वे भ्रम में फँसे रहें और मेरे मन की बात न जान सकें।

और दूसरी ओर उसने देवकी के गर्भ–मासों की पूरी निगरानी और गणना (रजस्वला होने के दिनों से शुरू करके) केलिए अपने विश्वास–पात्र नियुक्त कर दिए। निश्चय ही वसुदेव इस रहस्य को जान गए थे।

यह तो कंस का दुर्भाग्य कहना चाहिए कि कृष्ण बजाय नौवें या दसवें मास में जन्म लेने के आठवें मास में ही पैदा हो गए। कंस के सारे सेवक, हीजड़े, दास–दासियां तो नौवें मास की प्रतीक्षा में बैठे रहे और कृष्ण आठवें मास में जन्म लेकर गोकुल ग्राम पहुंचा दिए गए।

श्रीकृष्ण–जन्म सम्बन्धी इस सरल और स्वाभाविक–सी घटना को चमत्कारपूर्ण बना दिया। कहा गया कृष्णजन्म पर बन्दीगृह के सारे ताले स्वयं खुल गए, किवाड़ स्वयं खुल गए, चौकीदार और सन्तरी सो गए और वसुदेव पुत्र

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi.

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को नन्द के पास छोड़कर वापिस बन्दीगृह में आ गए। तब सारे द्वार स्वतः बन्द हो गए, सारे ताले स्वतः बन्द हो गए।

हम मात्र इतना निवदेन करना चाहेंगे कि श्रीकृष्ण का आठवें मास में जन्म हो जाना उपर्युक्त समस्त वर्णन को निरस्त करने के लिए पर्याप्त है। कंस के सारे कर्मचारी निश्चय से आठवें मास में तो लापरवाह रहे ही होंगे। उन्हें सोते कहो या मुर्दे, फ़र्क क्या पड़ता है ? आठवें मास में चौकीदार या हीजड़े या दास–दासियों की लापरवाही एकदम स्वाभाविक थी। करागार में बन्द तो थे ही नहीं। ताले थे न रक्षक न चौकीदार। ऐसे में कृष्ण को सुरक्षित बचा ले जाना अत्यन्त सरल हो गया। आप इसे चमत्कार बनाना चाहें तो दूसरी बात है।

देवकी माता की दो सन्तानों का वर्णन अभी शेष है, एक तो कन्या और दूसरा वह गर्भ जो रोहिणी ने जना।

१– "योगमाया ने देवकी के गर्भ से निकाल कर सातवां गर्भ रोहिणी में स्थापित कर दिया" इस विषय पर लम्बा लिखने के बजाय हम मात्र इतना ही निवेदन करना चाहेंगे कि एक बार श्रीमद्भागवत् में इस प्रसंग को देख लें–

गर्भे प्रणीते देवक्या रोहिणीं योगनिद्रया।
अहो विस्त्रंसितो गर्भ इति पौरा विचुक्रुशुः।। १०–२–१५–१२३

"जब योगमाया ने देवकी का गर्भ ले जाकर रोहिणी के उदर में रख दिया, तब पुरवासी बड़े दुःख के साथ आपस में कहने लगे–'हाय! देवकी का यह गर्भ तो गिर गया–नष्ट हो गया।"

वास्तविकता यही थी। सबको पता था देवकी का गर्भ गिर गया। गर्भ गिरने के अलावा अन्य कोई विचार किसी के दिमाग़ में नहीं था पर उसे चमत्कार बना दियागया और उसे रोहिणी के गर्भ में स्थापित बता दिया गया।

२– "जिस आठवें गर्भ की हत्या के नाम पर कंस ने कन्या की हत्या की थी–वह कौन थी ?"

श्रीमद्भागवत कहता है:–

अथकाले उपावृत्ते देवकी सर्वदेवता ।
पुत्रान् प्रसुषुवे चाष्टौ कन्यां चैवानुवत्सरम्।।

"समय आने पर देवकी के गर्भ से प्रतिवर्ष एक–एक करके आठ पुत्र तथा एक कन्या उत्पन्न हुए।" १०–१–५५–१२०

नन्द बाबा वसुदेव से कहने लगे–"भाई, कंस ने देवकी के गर्भ से उत्पन्न तुम्हारे कई पुत्र मार डाले। अन्त में जो सबसे छोटी कन्या बची थी वह भी स्वर्ग सिधार गई।" (१.६–२६–१४८)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अहो ते देवकीपुत्राः कंसेन बहवो हताः ।
एकावशिष्टावरजा कन्या सापि दिवंगता।। (१०–६–२६–१४८)

स्पष्ट है देवकी को नौ गर्भ रहे, नोवीं कन्या स्वतः मर गई थी।

कृष्ण के रूप में जन्मे आठवें गर्भ को सुरक्षित और बिना किसी दूसरे के जाने नन्द बाबा के यहां सुरक्षित कर दिया गया और अगले वर्ष कन्या का जन्म होने पर उसके अपनी मौत मर जाने पर कंस द्वारा कन्या–वध का प्रसंग पीछे बढ़ा दिया गया हो, ऐसी सम्भावना हो सकती है। इस बात को हम इस कारण कहते हैं क्योंकि नन्द तो निस्सन्तान थे। बुढ़ापे में अब किसी सन्तान की आशा नहीं रही थी। वसुदेव ने नन्द से मिलने पर स्वयं कहा था "तुम्हारी अवस्था ढल चली थी, अब तक तुम्हें कोई सन्तान नहीं हुई थी, सन्तान की आशा भी नहीं थी, यह बड़े सौभाग्य की बात है कि अब तुम्हें सन्तान प्राप्त हो गई है।" (कृष्ण के रूप में तुम्हें सन्तान मिल गई है।)

दिष्ट्या भ्राताः प्रवयस इदानीम्प्रजस्यते।
प्रजाशया निवृत्तस्य प्रजा यत् समपद्यत।। १०–५–२३–१४७

जब नन्दबाबा बालक कृष्ण को मथुरा में साथ ले गए थे और कृष्ण को वसुदेव से मिलवाकर वापिस ले आए थे, उक्त वार्ता उस प्रसंग का एक भाग है।(लेखक की कृति 'श्री कृष्णगौरव गाथा' से उद्धृत)

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (पंजीकृत) की ओर से देवदत्त बाली द्वारा सरस्वती प्रेस, ६ फालतू लाइन देहरादून में मुद्रित कराकर वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून–२४८००८ (दूरभाष ७८७००१) से प्रकाशित। सम्पादक देवदत्त बाली ।

सेवामें:-

,78-श्री शिवदयाल आर्य, 70 दयानन्द विहार,
विकास मार्ग, दिल्ली-110092

अदेयता की स्थिति में कृपया लौटाएं– सम्पादक, 'पवमान' मासिक, १६३–२ पल्टन बाज़ार, देहरादून–२४८००१
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi